71

राजा का निमन्त्रण

मत्ती 22:1-14, एक निकट दृष्टि

मैं दरवाज़े पर किसी के दस्तक देने की कल्पना करता हूं। दरवाज़ा खोलने पर आपको एक प्रतिष्ठित लगने वाला व्यक्ति खड़ा मिलता है। ''मैं वाशिंगटन डी.सी. से आपको यह देने आया हूं,'' वह कहता है। वह आपको एक लिफ़ाफा पकड़ाता है। उस लिफाफे में किसी राजकीय काम के लिए अमेरिका के राष्ट्रपति का निमन्त्रण है। वह आदमी कहता है, ''मेरी गाड़ी खड़ी है, आप जितनी जल्दी हो सके तैयार हो जाएं, और मैं आपको हवाई अड्डे ले जाऊंगा। राष्ट्रपति का जहाज़ आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।''[1] यह बहुत ही रोमांचकारी होगा। परन्तु आज का प्रवचन एक ऐसे निमन्त्रण के बारे में है, जो उससे भी अधिक रोमांचकारी और महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह संसार के राजा अर्थात हाकिम का निमन्त्रण है!

बाइबल का हमारा यह हवाला मत्ती 22:1-14 में मिलता है। यीशु की निजी सेवकाई के अन्तिम सप्ताह की बात है। घटनाएं मंगलवार, ''प्रश्नों के महान दिन'' की हैं। मन्दिर में लोगों को सिखाने के समय, यीशु का सामना महासभा के प्रतिनिधियों से हो गया था। उन्होंने उससे पूछा, ''तू ये काम किस के अधिकार से करता है?'' (मत्ती 21:23)। अपने उत्तर के भाग के रूप में, प्रभु ने तीन दृष्टांत कहे, जिनमें उसके शत्रुओं का पाप दिखाई देता था। पहले दो दृष्टांत दो पुत्रों का दृष्टांत और दुष्ट किसानों का दृष्टांत थे। तीसरा दृष्टांत राजा के पुत्र के विवाह के भोज का था। यह यीशु द्वारा कहे गए कई सप्ताह पहले दृष्टांत से मिलता-जुलता था (लूका 14), परन्तु इसकी कई बातें उससे अलग थीं। यह इस बात में विलक्षण है कि यह दोहरा दृष्टांत अर्थात दो दृष्टांतों में एक है।[2] दूसरा विवाह के वस्त्र का दृष्टांत कहा जा सकता है।

मैं इस प्रवचन का शीर्षक ''राजा का निमन्त्रण'' दे रहा हूं! इसमें हम इस निमन्त्रण के सम्बन्ध में बाइबल से तीन सच्चाइयां देखेंगे।

यह आनन्द करने का एक निमन्त्रण है (आयतें 1-3)

दृष्टांत

आयत इन शब्दों से आरम्भ होती है: ''इस पर यीशु फिर उन से दृष्टांतों में कहने लगा। स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है, जिस ने अपने पुत्र का ब्याह किया'' (आयतें 1, 2)।

दृष्टांत में राजा परमेश्वर को कहा गया है। कहानी के आरम्भ में, राजा ने ''अपने दासों को भेजा, कि नेवताहारियों को ब्याह के भोज में बुलाए'' (आयत 3क)।

मुख्य बात

पहले मैं निमन्त्रण की प्रकृति पर ध्यान दिलाना चाहता हूं कि यह विवाह के भोज, अर्थात एक उत्सव के अवसर का निमन्त्रण था। पुराने नियम में, विवाह और भोज के रूपकों का इस्तेमाल मसीहा के युग अर्थात मसीहियत की भविष्यवाणी के लिए किया जाता था।[3] नये नियम में, इन रूपकों का इस्तेमाल आगे भी होता है।[4] कलीसिया मसीह की दुल्हन है (इफिसियों 5:23-27, 31, 32; 2 कुरिन्थियों 11:2 भी देखें)।[5] एक अर्थ में, ''विवाह का भोज'' आरम्भ हो चुका है,[6] और यह अनन्तकाल तक चलता रहेगा। प्रकाशितवाक्य में, परमेश्वर के लोगों की विजय का जश्न मनाया जाता है: ''धन्य हैं वे, जो मेमने के विवाह के भोज में बुलाए गए हैं'' (19:9क)।

इस रूपक से, हमें मसीही जीवन में मिलने वाली आशिषों और आनन्द से प्रभावित होना चाहिए। हां, मसीही होने के निराशाजनक पहलू से भी। दृष्टांतों में राज्य की तुलना दाख की बारी या खेत में काम करने वाले मज़दूरों से भी की गई है, परन्तु मसीहियत के लिए यही सब कुछ नहीं है।[7] इसमें एक आनन्द है।

दुर्भाग्यवश, हर मसीही को इसकी समझ नहीं आती। चौथी शताब्दी के बाद के लिखे एक पत्र में मसीह के शारीरिक रूप का आभास कराया गया है। अन्य बातों के अलावा, यह कहा गया कि प्रभु को ''कभी हंसते नहीं देखा गया था, बल्कि कई बार रोते'' अवश्य देखा गया था।[8] इस विवरण का वास्तव में कोई आधार नहीं है।[9] तौ भी, ''यीशु के प्रारम्भिक लिखित विवरण होने के कारण, इससे अगले युगों की कला और मूर्तिकला प्रभावित हुई, जिस कारण आज भी यीशु को अक्सर ऐसे व्यक्ति के रूप में दिखाया जाता है, जो कभी हंसा हो।''[10]

वर्षों से, यीशु के अनुयायी कहलाने वाले लोगों ने कई बार अपने विश्वास को ऐसे दिखाया है, जैसे मसीहियत में कोई आनन्द न हो। प्रोटेस्टेंट लोग बच्चों के खिलौनों को ''शरीर के काम'' कहकर ठुकराते थे। जॉन वेसली ने बच्चों के एक बोर्डिंग स्कूल की स्थापना की, तो उसने उनके लिए सर्दी हो या गर्मी, सुबह 4 बजे जागना अनिवार्य कर दिया। उसके स्कूल में कोई आधी छुट्टी या छुट्टी नहीं होती थी, और न किसी प्रकार के खेल की अनुमति थी।

इस चिरस्थाई उदासी के विपरीत, पौलुस ने लिखा, ''प्रभु में सदा आनन्दित रहो; मैं फिर कहता हूं, आनन्दित रहो'' (फिलिप्पियों 4:4)। मैं एक बार फिर कहता हूं कि विवाह के भोज का निमन्त्रण आनन्द करने का निमन्त्रण है।

आनन्दित होना आवश्यक है, इसलिए आइए दो सच्चाइयों पर विचार करते हैं। (1) यदि हम राजा का निमन्त्रण ठुकराते हैं, तो हम आनन्द को ठुकरा रहे हैं। दृष्टांत में उन लोगों पर दोहरी मार पड़ी, जिन्होंने निमन्त्रण को ठुकरा दिया था: उन्हें बाहर तो निकाला ही

गया, वे दावत का आनन्द भी नहीं ले पाए। (2) यदि हम निमन्त्रण स्वीकार करते हैं, तो हमें आनन्दित *होने* की कोशिश करनी चाहिए। परमेश्वर विवाह के अपने भोज पर आने वाले अतिथियों के चेहरे उतरे हुए नहीं देखना चाहता।

यह एक निमन्त्रण है जिसे स्वीकार करना आवश्यक है (आयतें 3-10, 14)

दृष्टांत

आइए कहानी में वापस चलते हैं। राजा ने ''अपने दासों को भेजा, कि नेवताहारियों को ब्याह के भोज में बुलाए'' (आयत 3क)। वचन में दोहरे निमन्त्रण का सुझाव मिलता है: कुछ लोगों को भोज में आने का निमन्त्रण पहले ही मिल चुका था; फिर, जब भोज तैयार हो गया, तो दासों को इन बुलाए हुए लोगों को बताने के लिए दोबारा भेजा गया, ताकि अब वे आ जाएं।[11]

निमन्त्रण पाने वाले इस्राएलियों को कहा गया था।[12] उन्हें नबियों द्वारा जो मसीहा के भोज की शिक्षा देते थे ''आमन्त्रित'' किया गया था। यह तथ्य कि दृष्टांत दूसरे निमन्त्रण की बात करता है संकेत देता है, कि यहूदियों ने पहला निमन्त्रण स्वीकार कर लिया था; जिसका अर्थ यह है कि उन्होंने मसीहा के राज्य के आने की अवधारणा स्वीकार कर ली थी।

जब बुलाए हुओं को बताया गया कि भोज तैयार है, तो ''उन्होंने आना न चाहा'' (आयत 3ख)। इस प्रकार उन्होंने अपना हठी और विद्रोही मन दिखा दिया। परन्तु राजा उन्हें एक और अवसर देना चाहता था। हो सकता है कि उसने सोचा हो, ''उन्हें पहले दूतों की बात समझ नहीं आई, मैं उन्हें संदेह का लाभ दूंगा।'' इसलिए ...

> ... उस ने और दासों को यह कहकर भेजा, कि नेवताहारियों से कहो, देखो; मैं भोज तैयार कर चुका हूं, और मेरे बैल और पले हुए पशु मारे गए हैं [ये पशु भोज के दिन तक मारे नहीं गए थे]: और सब कुछ तैयार है [मीट बन चुका था और सब कुछ खाने के लिए तैयार था]; ब्याह के भोज में आओ (आयत 4)।

लूका 14 अध्याय वाले दृष्टांत के अनुसार बुलाए हुए मेहमान बहाने बनाने लगे। इस दृष्टांत में, उन्होंने बुलाए जाने को नज़रअन्दाज कर दिया: ''परन्तु वे बेपरवाई ही करके चल दिए'' (आयत 5क)। मूल भाषा में उनकी बेपरवाही पर ज़ोर दिया गया है। इब्रानियों 2:3 में इसी यूनानी शब्द का अनुवाद ''निश्चिन्त'' किया गया है। बुलाए हुए लोग अवसर के महत्व को न समझ सके। KJV में अनुवाद किया गया है, ''उन्होंने इसे हल्की बात जाना।''

राजा का दोहरा अपमान हुआ। कुछ ने उसका अपमान अपने मामलों में आवश्यकता से अधिक व्यस्त होकर किया: उनमें से कोई ''अपने खेत को, कोई अपने व्यापार को''

(आयत 5ख) चला गया। ये बुरे काम नहीं थे; परन्तु राजा के निमन्त्रण से महत्वपूर्ण नहीं थे। विलियम बार्कले ने लिखा है:

> मनुष्य के लिए समय की वस्तुओं से इतना व्यस्त होना आसान है कि उसे अनन्तकाल की वस्तुएं भूल जाएं, दिखाई देने वाली वस्तुओं में गुम हो जाना आसान है कि उसे दिखाई न देने वाले वस्तुएं भूल जाएं। संसार के दावों को ध्यान से सुनना कि उसे मसीह की पुकार का कोमल निमन्त्रण ही सुनाई न दे। जीवन की त्रासदी यह है कि यह अक्सर द्वितीय उत्तम होता है जो सर्वोत्तम को बंद कर देता है, यानी ये वे वस्तुएं हैं जो अपने आप में अच्छी हैं, जो सर्वोच्च वस्तुओं का रास्ता बंद कर देती हैं।[13]

दूसरों ने इस हाकिम का अपमान भयंकर रूप से ठुकराकर किया: ''औरों ने जो बच रहे थे, उसके दासों को पकड़कर उन का अनादर किया और मार डाला'' (आयत 6)। यह यहूदियों द्वारा नबियों के साथ किए गए व्यवहार को दिखाता था और शायद बाद में प्रेरितों के साथ किए जाने वाले व्यवहार का भी पूर्वाभास था। कुछ ने बुलाए जाने को नज़रअन्दाज किया और कुछ ने इसका विरोध किया, परन्तु दोनों ही मामलों में अन्तिम परिणाम एक जैसा हुआ।

हमारे यहां, हमें कई बार दूसरी तरह के लोग मिलते हैं, परन्तु पहली तरह के लोग तो आम मिल जाते हैं। बहुत, बहुत से लोग दूसरे कामों में इतने व्यस्त हैं कि उन्हें राजा के निमन्त्रण में कोई दिलचस्पी नहीं है।

वास्तव में जो व्यवहार राजा के भेजे हुओं के साथ हुआ था, वह राजा के साथ ही हुआ था।[14] इस कारण जब राजा ने सुना कि क्या हुआ है, तो उसने ''क्रोध किया'' (आयत 7क)। इस बात को समझें कि परमेश्वर परोपकारी हो सकता है, परन्तु वह क्रोधित भी हो सकता है। जब परमेश्वर क्रोधित हो, तो पीछे खड़े हो जाएं!

राजा ने ''अपनी सेना भेजकर उन हत्यारों को नाश किया, और उन के नगर को फूंक दिया'' (आयत 7ख)। संदर्भ में सम्भवतया यह 70 ईस्वी में रोमी सेना द्वारा किए गए यरूशलेम के विनाश की बात है।

तौ भी भोज तैयार था। राजा ने अपने दासों से कहा, ''ब्याह का भोज तो तैयार है, परन्तु नेवताहारी योग्य नहीं ठहरे'' (आयत 8)। ''योग्य नहीं'' योग्यता की कमी का नहीं, बल्कि इस तथ्य का संकेत है कि उन्होंने निमन्त्रण ठुकराकर अपने आप को अयोग्य साबित किया (देखें प्रेरितों 13:44-46)। NIV में कहा गया है कि वे ''आने के योग्य नहीं।''

सेवकों से कहा गया कि ''चौराहों में जाओ, और जितने लोग तुम्हें मिलें सब को ब्याह के भोज में बुला लाओ'' (आयत 9)। यूनानी वाक्यांश का अनुवाद ''चौराहों'' उन क्षेत्रों का संकेत देता है, जहां लोग आम तौर पर इकट्ठे होते हैं। NIV में ''गली के कोनों'' है। क्या आपके गांवों या नगर में कोई ऐसी जगह है, जहां दिन हो या रात किसी भी समय लोगों

का जमघट मिल जाता हो? ''चौराहों'' शब्द में इसी भाव का विचार है। राजा ने कहा, ''जितने लोग तुम्हें मिलें, सब को ब्याह के भोज में बुला लाओ।'' यह ग्रेट कमीशन की तरह नहीं लगता? ''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो'' (मरकुस 16:15)।

दूतों ने वही किया, जो राजा ने कहा था: उन्होंने ''सड़कों पर जाकर क्या बुरे, क्या भले, जितने मिले, सब को इकट्ठे किया'' (आयत 10क)।[15] ''बुरे और भले'' का अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर के राज्य में बुराई के लिए स्थान है, बल्कि इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर का ध्यान सब लोगों में है, वे चाहे बुरे हों या भले, वह हर एक को निमन्त्रण देता है। सुसमाचार सब के लिए है। पिछले अध्याय में, प्रभु ने ध्यान दिलाया था कि उसके समय के ''बुरे'' लोग ''धार्मिक'' लोगों से अधिक वचन को मानने वाले थे (मत्ती 21:28-32)।

अनुग्रह से उद्धार की शिक्षा का संकेत इसमें मिलता है; ''गलियों में'' मिलने वाले लोग इस योग्य नहीं थे कि उन्हें बुलाया जाता। उन्होंने भोज में आने के लिए कोई अधिकार नहीं पाया था। यह तो पूर्णतया अनुग्रह के कारण था (इफिसियों 2:8, 9)।

दासों द्वारा लोगों को आस-पास के क्षेत्र से ढूंढ़ लाने के बाद, ''ब्याह का घर जेवनहारों से भर गया'' (आयत 10ख)। कुछ लोगों द्वारा निमन्त्रण ठुकराए जाने और अपना अपमान होने के कारण राजा ने भोज रद्द नहीं किया। उसने इसके बावजूद भोज दिया और उसका घर जश्न मनाने वाले अतिथियों से भर गया। इसी प्रकार, लोग परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों को निष्फल नहीं कर सकते।

मुख्य बात

दृष्टांत के पहले भाग से हम काफ़ी कुछ सीख सकते हैं, परन्तु आइए विशेष तौर पर यह सीखते हैं कि निमन्त्रण हम सब के लिए है, लेकिन हर किसी को इसे स्वीकार करने या ठुकराने का अधिकार है। परन्तु इस बात को समझें कि यदि हम इस निमन्त्रण को ठुकराते हैं, तो हम राजा को बहुत नाराज़ करते हैं।

आयत 14 पर ध्यान दें: ''क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत हैं, परन्तु चुने हुए थोड़े हैं।'' ''बहुत'' शब्द ''सब'' का संकेत देता है:[16] सुसमाचार के द्वारा सब को बुलाया जाता है (2 थिस्सलुनीकियों 2:14)। अफ़सोस की बात है कि ''चुने हुए थोड़े'' से ही हैं। संदर्भ में ''चुने हुए'' का अर्थ विवाह के भोज का आनन्द लेने की अनुमति पाए हुए है। क्या राजा ने किसी व्यक्ति विशेष के लिए यह निर्णय लिया था कि उसे आने देना है या नहीं? नहीं। बुलाए गए हर व्यक्ति ने राजा का निमन्त्रण स्वीकार करके या ठुकराकर स्वयं निर्णय लिया था कि उन ''चुने हुओं'' में शामिल होना है या नहीं।

परमेश्वर *आपसे* चाहता है कि आप मसीही बनें। उसने ''विवाह के भोज'' पर आने के लिए *आपको* व्यक्तिगत निमन्त्रण दिया है। यीशु ने कहा, ''हे सब परिश्रम करने वालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा'' (मत्ती 11:28)। फिर,

उसने कहा, ''देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ'' (प्रकाशितवाक्य 3:20)। पौलुस ने लिखा है, ''देखो, अभी वह प्रसन्नता का समय है, देखो; वह उद्धार का दिन है'' (2 कुरिन्थियों 6:2ख)। ''और आत्मा और दुल्हिन दोनों कहती हैं, आ; और सुनने वाला भी कहे, कि आ; और जो प्यासा हो, वह आए, ...'' (प्रकाशितवाक्य 22:17)। परन्तु अन्त में प्रभु के अनुग्रहकारी निमन्त्रण को स्वीकार करना या ठुकराना *आप* का काम है।

इस निमन्त्रण में ज़िम्मेदारी है (आयतें 11-14)

दृष्टांत

हमारी बात खत्म नहीं हुई है। अभी इस दोहरे दृष्टांत का दूसरा भाग बचा है। घर भर जाने के बाद, ''राजा जेवनहारों को देखने भीतर आया'' (आयत 11क)। मूलत: उसने ''झुके हुओं'' को देखा। लोग शानदार दावत का आनन्द लेने के लिए तैयार, भोज की मेज़ पर झुके हुए थे।

जब राजा ने भीड़ पर नज़र दौड़ाई, ''तो उसने वहां एक मनुष्य देखा, जो ब्याह के वस्त्र नहीं पहिने था'' (आयत 11ख)। ऐसे कार्यक्रम में किसी अतिथि द्वारा उपयुक्त वस्त्र न पहनना[17] मेज़बान का अपमान था।

> द्वितीय विश्वयुद्ध के अन्त में, रूसी सरकार के प्रमुख ने ब्रतानवी प्रधानमंत्री, विंस्टन चर्चिल के स्वागत में एक शानदार भोज दिया। रूसी लोग अपने सबसे अच्छे परम्परागत पहरावे या सैनिक वर्दियां पहनकर आए पर उनके सम्मानित अतिथि ने नहीं पहनी। चर्चिल अपनी प्रसिद्ध ज़िपर कवरऑल पहनकर आए जो उन्होंने लंदन में जर्मनी के वी-बम हमलों के दौरान पहनी थी। उन्हें लगा कि इससे वह घटना याद रहेगी और रूसी लोग इसे पसन्द करेंगे। उन्होंने पसन्द नहीं किया। उन्हें बुरा लगा और उन्होंने इस बात में अपने आप को अपमानित महसूस किया कि उनके सम्माननीय अतिथि ने उनके भोज को इस योग्य नहीं समझा कि उसमें अपने बेहतरीन वस्त्र पहनकर आए।[18]

एक और उदाहरण ध्यान में आता है: यदि किसी पिता ने अपनी बेटी को विवाह का महंगा लहंगा खरीदने के लिए पैसे दिए हों, परन्तु वह गंदी जीन पहनकर शादी के समारोह में आ जाए? क्या आपको लगता है कि पिता को बुरा नहीं लगेगा? आप ऐसे ही कई और उदाहरण सोच सकते हैं।

इस बात पर विवाद उठता है कि दृष्टांत वाले इस आदमी से विवाह के वस्त्र पहनने की उम्मीद क्यों की गई। लोगों ने विरोध किया है, ''पर राजा ने तो गली कूचों से अतिथियों को बुलाया था। उसे औपचारिक वस्त्र पहनकर आने वालों की उम्मीद क्यों रखनी चाहिए

थी ?'' इसका उत्तर देने के लिए, यह ध्यान दिलाया गया है कि कुछ मध्यपूर्वी देशों में, एक सहायक द्वारा मेज़बान की ओर से हर अतिथि को एक चोगा या सफ़ेद वस्त्र दिया जाता था।[19] आज भी, जहां मैं रहता हूं, वहां विवाह की पार्टी में भाग लेने वालों (जो निकाह के समय दुल्हन के आगे खड़े होते हैं) को दुल्हन के परिवार द्वारा आम तौर पर वस्त्र उपलब्ध करवाया जाता है। यदि उस जमाने में भी पलिश्तीन में कुछ ऐसा ही होता था, तो दिए गए वस्त्र को पहनने से इनकार करके उस आदमी ने अपने मेज़बान का अपमान किया था। अन्य लोगों ने सुझाव दिया है कि राजा ने बुलाए गए लोगों को घर जाकर साफ़ सुथरे बनकर आने का समय दिया था। यदि ऐसा था, तो उस आदमी से अच्छे वस्त्र पहनने की उम्मीद होनी ही थी।

हमें गहराई में जाने की आवश्यकता नहीं है। मुख्य बात यह है कि किसी न किसी तरह, वह आदमी विवाह के लिए तैयार *हो सकता* था, परन्तु *हुआ नहीं*। अगली आयत से संकेत मिलता है कि इस आदमी को *पता* था कि वह बहाना नहीं बना सकता।

ध्यान दें कि उस आदमी के सही ढंग से वस्त्र पहनने का निर्णय *राजा* का था–बिल्कुल ऐसे ही परमेश्वर हमारे विषय में यह निर्णय लेता है। निश्चय ही जब हम उचित ''वस्त्र'' पहनने की बात करते हैं, तो हम बाहरी नहीं, बल्कि भीतरी वस्त्रों की बात कर रहे होते हैं।[20] ऐसे मामलों पर निर्णय लेने की योग्यता मुझ में नहीं है। हो सकता है कि मैं किसी को यह समझ लूं कि उसने आत्मिक वस्त्र पहने हैं, जबकि उसने न पहने हों, और हो सकता है कि मुझे लगे कि किसी ने उपयुक्त आत्मिक वस्त्र नहीं पहने, जबकि वास्तव में उसने पहने हों (देखें 1 शमूएल 16:7)। मनों को तो केवल परमेश्वर ही जान सकता है (प्रेरितों 15:8)। हम में से हर एक को *निजी* प्रासंगिकता बनाने की आवश्यकता है कि ''जब परमेश्वर *मेरे* मन में देखता है तो वह क्या देखता है ?''

जब राजा ने देखा कि इस आदमी ने ब्याह के वस्त्र नहीं पहने हैं, तो उसने उससे कहा, ''हे मित्र;[21] तू ब्याह का वस्त्र पहिने बिना यहां क्यों आ गया ?'' (मत्ती 22:12क)। उस हाकिम ने जवाब मांगा था। संकेत यह है कि यदि उस आदमी के पास उचित कारण होता, तो उसे क्षमा कर दिया जाता। परन्तु ''उसका मुंह बन्द हो गया'' (आयत 12ख)। ''बन्द हो गया'' ''मुसका'' या ''ठेंठी'' लग गई के लिए यूनानी शब्द से लिया गया है। उस आदमी के पास कोई बहाना भी नहीं था।

फिर राजा ने अपने ''सेवकों से कहा'' (आयत 13क)। ये वे दास नहीं थे, जो निमन्त्रण देने गए थे, बल्कि राजा के घर में मजदूरी पर लगाए गए सेवक थे।[22] रिचर्ड ट्रेंच ने उन्हें ''सेवा करने वाले सहायक'' कहा है।[23] वे प्रभु के दूत हैं, जो ''उसके राज्य में से सब ठोकर के कारणों को और कुकर्म करने वालों को इकट्ठा करेंगे'' (मत्ती 13:41; देखें मत्ती 13:49; लूका 19:24)।

राजा ने सेवकों से कहा, ''इस [आदमी] के हाथ-पांव बान्धकर [जिससे यह भोज में दोबारा प्रवेश न कर सके (देखें लूका 16:26)] उसे बाहर अन्धियारे में डाल दो, वहां रोना, और दांत पीसना होगा'' (मत्ती 22:13ख)। दृष्टांत के रूपक को समझने के लिए हम इन

शब्दों का इस्तेमाल कर सकते हैं: ''इसे भोज की रोशनी और चमक से दूर, रात के अंधेरे में फैंक दो, जहां यह इस अद्‌भुत अवसर को खोने पर रोता और दांत पीसता रहे।'' आप में से अधिकतर लोग जानते हैं कि नरक की आग में दण्ड के लिए ऐसी ही शब्दावली का इस्तेमाल किया गया है (मत्ती 8:12; 25:30)।

मुख्य बात

इस दृष्टांत से जो बात हम सब को सीखनी आवश्यक है, वह यह है कि आरम्भ में प्रभु के निमन्त्रण को स्वीकार करना[24] ही काफ़ी नहीं है। हमें भोज का आनन्द उठाने के लिए अपने मेज़बान के प्रति उचित सम्मान दिखाते रहना चाहिए है।[25]

विशेषकर, हमें आत्मिक वस्त्र पहने होना आवश्यक है। उपयुक्त भीतरी वस्त्र पहनने को स्वीकार करने का रूपक इफिसियों 4:22-24 में पौलुस द्वारा प्रयुक्त ऐसी अभिव्यक्तियों में पाया जाता है: ''... पुराने मनुष्यत्व को ... उतार डालो ... और नये मनुष्यत्व को पहन लो'' (कुलुस्सियों 3:10, 12, 14 भी देखें)। गलातियों के मसीही लोगों के नाम इस प्रेरित ने लिखा, ''क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है, *उन्होंने* मसीह को *पहिन लिया है*'' (गलातियों 3:26, 27; रोमियों 13:14 भी देखें)। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, परमेश्वर के विजयी लोग ''मेमने के लहू में धोकर श्वेत किए'' हुए ''श्वेत वस्त्र'' पहने हुए हैं (प्रकाशितवाक्य 7:9, 14; प्रकाशितवाक्य 3:4, 5, 18; 6:11; 22:14 भी देखें)। मसीही बन जाने और उन ''श्वेत वस्त्रों'' को पहन लेने के बाद, हमें मसीही जीवन विश्वासपूर्ण ढंग से बिताकर (प्रकाशितवाक्य 2:10) और पाप करने पर प्रभु के पास लौटकर (1 यूहन्ना 1:7, 9) उन्हें शुद्ध *रखना* आवश्यक है (देखें याकूब 1:27)।

हमने पहले विचार किया था कि हमारा उद्धार अनुग्रह से हुआ है, परन्तु यह ''सस्ता अनुग्रह'' नहीं है।[26] पौलुस के समय में, कुछ लोग यह सिखा रहे थे कि अनुग्रह से उद्धार की शिक्षा से व्यक्ति को अनुमति मिल जाती है कि वह जैसे चाहे जी सकता है। पौलुस प्रेरित ने उत्तर दिया:

> सो हम क्या कहें? क्या हम पाप करते रहें, कि अनुग्रह बहुत हो? कदापि नहीं, हम जब पाप के लिए मर गए तो फिर आगे को उस में क्योंकर जीवन बिताएं? क्या तुम नहीं जानते, कि हम सबने जिन्होंने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, उस की मृत्यु का बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें (रोमियों 6:1-4)।

जैसे पहले ही ध्यान दिलाया गया है, यीशु ने समाप्ति इन शब्दों से की: ''क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत परन्तु चुने हुए थोड़े हैं'' (मत्ती 22:14)। यहूदियों में एक कहावत थी,

जिसमें कहा जाता था कि मिस्र से बहुत से लोगों को बुलाया गया था, परन्तु प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश के लिए चुने गए केवल थोड़े थे। इस दृष्टांत का मतलब यही है कि बुलाया तो सब को गया, परन्तु दिए गए भोज का आनन्द लेने के लिए दावत में शामिल होने की वास्तव में अनुमति कुछ ही लोगों को मिली।

सारांश

निमन्त्रण के एक प्रसिद्ध गीत में यह कहा गया है:

दावत के लिए आ जाओ, ''सब कुछ तैयार है!''
आ जाओ, क्योंकि मेज़ बिछा हुआ है;
तुम जो भूखे मरते हो, तुम जो थके हो, आओ,
और तुम्हें पेट भर खाना मिलेगा।[27]

यीशु के लिए मरना आवश्यक था, ताकि आप परमेश्वर के आत्मिक भोज का आनन्द ले सकें। राजा के निमन्त्रण को हल्का जानकर उसका अपमान न करें। आपके प्राण दांव पर लगे हैं। आज ही उसे ''हां'' कह दें।

नोट

इस प्रवचन का वैकल्पिक शीर्षक ''एक शाही निमन्त्रण'' हो सकता है।

टिप्पणियां

[1]इसे अपने क्षेत्र की आवश्यकता के अनुसार बदल लें: किसी ऐसे व्यक्ति का निमन्त्रण बताएं जिसे आपके सुनने वाले जानते हों, ऐसा निमन्त्रण जिसे पाने वाले सम्मानित महसूस करें। [2]हमारे यहां दुकानदार ''एक के साथ एक फ्री'' आम तौर पर बेचते हैं। इस दृष्टांत में, आपको ''एक के साथ'' एक और दृष्टांत मिल जाता है। [3]विवाह की प्रतीकात्मक शैली पर, देखें यशायाह 61:10; 62:5; होशे 2:19. भोज की प्रतीकात्मक शैली के बारे में, देखें यशायाह 25:6; 65:13. (लूका 14:15 भी देखें।)। [4]विवाह की प्रतीकात्मक शैली के बारे में, देखें मत्ती 9:15; यूहन्ना 3:29. भोज की प्रतीकात्मक शैली के बारे में, देखें मत्ती 8:11, 12; लूका 22:30. [5]यहूदी विवाह के दो चरण होते थे: मंगनी और वास्तविक विवाह समारोह। मसीह के साथ कलीसिया के सम्बन्ध को दिखाते हुए नये नियम में इन दोनों घटनाओं को बताया गया है। 2 कुरिन्थियों 11:2 मंगनी की बात करता है, जबकि इफिसियों 5 दुल्हन के रूपक का इस्तेमाल करता है। ऐसे विवरण इस प्रवचन के लिए आवश्यक नहीं हैं। [6]एक लेखक ने इसे इस प्रकार कहा है: ''पार्टी शुरू हो चुकी है।'' [7]किसी ने ध्यान दिलाया है कि किसी दृष्टांत में मसीही जीवन को जनाज़े के साथ नहीं मिलाया गया। [8]यह झूठा पत्र लातीनी भाषा में लिखा गया था, शायद किसी पुबल्युस लैन्टुलस द्वारा, जिसे पिलातुस का समकालीन माना जाता है। यह जानकारी नील आर. लाइटफुट, *द पैरेबल्स ऑफ़ जीज़स,* भाग 2 (ऑस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1965), 12 से ली गई है। [9]किसी को ऐसे व्यक्ति के पास रहना अच्छा नहीं लगता जो कभी मुस्कराए न, परन्तु

लोग यीशु के साथ रहकर आनन्दित होते थे। यीशु की अधिकतर शिक्षाओं में उसके हंसमुख स्वभाव की झलक मिलती है। [10]लाइटफुट, 12. अगले पद्य में इसी स्रोत से जानकारी ली गई है।

[11]इस दोहरे निमन्त्रण को एस्तेर की पुस्तक से समझाया जा सकता है: एस्तेर ने हामान को एक भोज पर बुलाया (एस्तेर 5:8)। फिर, जब भोज का समय आ पहुंचा, तो उसने उसे लाने के लिए एक सेवक को भेजा (एस्तेर 6:15)। [12]इस से पहले पाठ में यह ध्यान दिया गया था कि संदर्भ में बुलाए हुए लोग सामान्य अर्थ में ''धार्मिक'' यहूदी और विशेष अर्थ में धार्मिक अगुवे थे। यह ध्यान दिया जा सकता है कि आम तौर पर ऐसे अवसरों पर मित्रों और महत्वपूर्ण लोगों को ही बुलाया जाता था। यहूदी परमेश्वर के चुने हुए लोग थे इसलिए उसके लिए वह महत्वपूर्ण थे और उन्हें उसके मित्र भी माना जा सकता है। [13]विलियम बार्कले, *द गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू,* अंक 2, संशो. संस्क., द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 268. [14]किसी आधुनकि उदाहरण पर विचार करें: जब आतंकवादी अमेरिका के दूतावास पर बम फैंकते हैं, तो उनका कार्य सीधे अमेरिका के विरुद्ध होता है, न कि उन लोगों के विरुद्ध जो उस बमबारी में मारे गए या घायल हुए। [15]पिछले पाठ में ध्यान दिया गया था कि संदर्भ में, वाक्यांश ''क्या बुरे क्या भले'' यहूदियों के ''अधार्मिक'' भाग को कहा गया है, और शायद अन्यजातियों को भी। [16]वचन में ''बहुत'' का इस्तेमाल कई बार ''सब'' के लिए होता है। ''*बहुतों* की छुड़ौती के लिए'' (मत्ती 20:28) और ''*सब* के छुटकारे के दाम में'' (1 तीमुथियुस 2:6) की तुलना करें। [17]विद्वान इस बात पर असहमत हैं कि वह वस्त्र वास्तव में क्या था, परन्तु इसमें कम से कम यह तो है कि वह अतिथि का अच्छे से अच्छा वस्त्र होगा। [18]एल्ड्रेड एकोल्स, *डिस्कवरिंग द परल ऑफ़ ग्रेट प्राइस* (फोर्ट वर्थ, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग, 1992), 167. [19]वहीं, 171. मेरी समझ के अनुसार ऐसा निर्धन को परेशान होने से बचाने के लिए किया जाना था। सामाजिक या आर्थिक स्थिति के बावजूद, सब को एक जैसे वस्त्र पहनने थे। [20]बाइबल अक्सर आत्मिक तौर पर ढंग के ''कपड़े'' पहनने की आवश्यकता को समझाने के लिए वस्त्रों के अलंकार का इस्तेमाल करती है। पुराने नियम के उदाहरणों में अय्यूब 29:14; यशायाह 61:10; यहेजकेल 16:10 शामिल है। नये नियम के कई हवाले इस पाठ में आगे दिए गए हैं। इनमें परमेश्वर के हथियार ''पहनने'' पर आयतें जोड़ी जा सकती है (रोमियों 13:12; इफिसियों 6:11–17; 1 थिस्सलुनीकियों 5:8)।

[21]सुसमाचार के वृत्तातों में ''प्रेम'' शब्द के एक रूप का अनुवाद ''मित्र'' हुआ है, परन्तु यहां उस शब्द का इस्तेमाल नहीं हुआ है। इस शब्द का अनुवाद ''कामरेड'' या ''साथी'' हो सकता है। इस शब्द का इस्तेमाल नये नियम में केवल मत्ती द्वारा किया गया है और उसमें इस शब्द के अर्थ के विपरीत संकेत मिलता है (मत्ती 20:13; 26:50)। [22]*Doulos* ''दास'' के लिए यूनानी शब्द है। यहां पर प्रयुक्त यूनानी शब्द *diakonos* है। [23]रिचर्ड सी. ट्रैंच, *नोट्स ऑन द पैरेबल्स ऑफ़ अवर लॉर्ड* (वैस्टवुड, न्यू जर्सी: फ्लैमिंग एच. रैवल कं., 1953), 243. [24]हम यह विश्वास और आज्ञा पालन से करते हैं। [25]यह हम विश्वासी मसीही जीवन बिताकर करते हैं। [26]''सस्ता अनुग्रह'' शब्द का आम तौर पर एक जर्मन धर्मशास्त्री डियट्रिच बोनहोफर (1906–45) के साथ जोड़ा जाता है। [27]चार्लट जी. होमर, ''कम टू द फीस्ट'' *सॉन्ग्स ऑफ़ द चर्च,* संक. व सम्पा. आल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोनरो लुईसियाना: हॉवर्ड पब्लिशिंग कं., 1977)। यदि आपके सुनने वाले इस गीत से परिचित हैं तो आप प्रवचन के अन्त में यह गीत गा सकते हैं।